International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 3 Issue 6, Nov-Dec, 2015, Impact Factor: 1.554

# समाज में टूटते परिवार: संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार की ओर बढ़ता प्रचलन

**डॉ. सुशील कुमार त्यागी**

विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र राजकीय महाविद्यालय, रतनगढ़, चूरू

---

**सारांश**

भारतीय समाज में संयुक्त परिवार पारंपरिक सामाजिक इकाई के रूप में लंबे समय तक प्रमुख स्वरूप रहा है, जहाँ श्रम, संसाधन, दायित्व और भावनात्मक सहयोग सामूहिक रूप से साझा किए जाते थे। किंतु **1970** के बाद और विशेषकर **1990** के आर्थिक उदारीकरण के पश्चात् परिवार संरचना में व्यापक परिवर्तन देखा गया। तेज शहरीकरण, उच्च शिक्षा का प्रसार, रोजगार की गतिशीलता, प्रवास में वृद्धि, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी, तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता और गोपनीयता की बढ़ती इच्छाओं ने संयुक्त परिवार व्यवस्था को धीरे-धीरे कमजोर किया। **2014** तक उपलब्ध शोधों और जनसांख्यिकीय आँकड़ों से स्पष्ट है कि एकाकी (न्यूक्लियर) परिवारों का प्रसार सामाजिक संरचना में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देता है। यह परिवर्तन न केवल परिवार के भीतर भूमिकाओं और संबंधों को प्रभावित कर रहा है, बल्कि वृद्धजन देखभाल, बाल पालन-पोषण, आर्थिक सुरक्षा, पारिवारिक मूल्य प्रणाली और सामाजिक सहायता तंत्र पर भी गहरा प्रभाव डाल रहा है। यह शोध पत्र **2014** तक के साहित्य एवं आंकड़ों के आधार पर संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार की ओर बढ़ते संक्रमण के कारणों, प्रभावों और भारतीय समाज के समक्ष उभरती चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

---

**परिचय**

भारतीय परिवार व्यवस्था प्राचीन काल से ही सामूहिकता, सहयोग और बहु-पीढ़ीय संबंधों पर आधारित रही है। संयुक्त परिवार केवल रहने की व्यवस्था नहीं था, बल्कि यह एक सामाजिक संस्था के रूप में कार्य करता था जो परिवार के सदस्यों को आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक मर्यादा, भावनात्मक सहयोग, बच्चों और वृद्धों की देखभाल तथा परंपराओं के संरक्षण जैसी बहुआयामी सुविधाएँ प्रदान करता था। इस व्यवस्था में परिवार के सभी सदस्य मिलकर श्रम, संसाधन और जिम्मेदारियों को साझा करते थे, जिससे जीवन अपेक्षाकृत स्थिर और संतुलित रहता था।

किन्तु 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध, विशेषकर 1970 के बाद और 1990 के उदारीकरण के पश्चात् भारत में तीव्र सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हुए। औद्योगिकीकरण और तीव्र शहरीकरण ने बड़ी संख्या में लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर आकर्षित किया। वैश्वीकरण, उच्च शिक्षा का विस्तार, निजी क्षेत्र में रोजगार की उपलब्धता, और महिलाओं की कार्यक्षेत्र में बढ़ती भागीदारी जैसी प्रक्रियाओं ने लोगों की जीवनशैली और परिवार संबंधी दृष्टिकोणों को नई दिशा दी।

इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप संयुक्त परिवारों का विखंडन तेज़ी से होने लगा। नौकरियों के लिए गतिशीलता, सीमित शहरी आवास, व्यक्तिगत गोपनीयता की इच्छा, और आर्थिक आत्मनिर्भरता ने एकाकी (न्यूक्लियर) परिवारों को बढ़ावा दिया।

2011 की भारतीय जनगणना एवं 2014 तक प्रकाशित राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (NSSO) और अन्य समाजशास्त्रीय अध्ययनों से स्पष्ट है कि भारत में एकाकी परिवारों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जबकि संयुक्त परिवारों का प्रतिशत घट रहा है। यह परिवर्तन केवल संरचनात्मक नहीं है, बल्कि सामाजिक संबंधों, मूल्यों और जीवनशैली में गहरे बदलावों को भी दर्शाता है।

**2. शोध उद्देश्य**

इस शोध पत्र के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था की संरचना और महत्त्व को समझना।
- संयुक्त परिवारों के टूटने के प्रमुख कारणों का गहन विश्लेषण करना।
- शहरीकरण, औद्योगिकरण, आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा के प्रभाव को परखना।
- एकाकी परिवार व्यवस्था के सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों की पहचान करना।
- बदलते परिवार स्वरूप से उत्पन्न चुनौतियों का मूल्यांकन करना।
- भविष्य में परिवार संस्थान को मजबूत बनाए रखने के उपाय सुझाना।

**3. भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था का स्वरूप**

भारतीय संयुक्त परिवार का स्वरूप बहु-पीढ़ीय, सामूहिक और सहयोगात्मक जीवन पद्धति पर आधारित है, जिसमें दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, भाई-बहन और अन्य संबंधी एक ही घर में साथ रहते हैं। संयुक्त परिवार की मूल परिभाषा यह है कि दो या अधिक पीढ़ियाँ एक ही छत के नीचे संसाधनों, दायित्वों, संपत्ति, भोजन और आय का सामूहिक रूप से उपयोग करती हैं। इस व्यवस्था में घर का मुखिया, जो अक्सर पितृसत्तात्मक संरचना के तहत पिता या दादा होता है, परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों का संचालन करता है और अन्य सदस्य उसके मार्गदर्शन में जीवनयापन करते हैं।

संयुक्त परिवार की प्रमुख विशेषताएँ इसकी सामूहिकता में निहित हैं। इसमें संसाधनों और आय का साझा उपयोग होता है, जिससे आर्थिक सुरक्षा बढ़ती है और प्रत्येक सदस्य को कठिन समय में सहयोग मिलता है। संयुक्त परिवार भावनात्मक स्थिरता प्रदान करता है, जहाँ सदस्य एक-दूसरे के सुख–दुःख में सहभागी होते हैं। बुजुर्गों का अनुभव और जीवन-ज्ञान परिवार के युवा सदस्यों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता है, जबकि बच्चों को संस्कार, परंपराएँ और सामाजिक मूल्य स्वाभाविक रूप से प्राप्त होते हैं। सामूहिक श्रम और जिम्मेदारियों के वितरण के कारण परिवार में कार्यभार संतुलित रहता है और घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल तथा सामाजिक दायित्व अधिक कुशलता से पूरे किए जाते हैं।

सामाजिक दृष्टि से संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की सामूहिकता, परस्पर सम्मान, और अनुशासन को मजबूत करने वाला आधार रहा है। यह विशेष रूप से बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए एक सामाजिक सुरक्षा तंत्र का कार्य करता है, जहाँ भावनात्मक तथा आर्थिक दोनों प्रकार का सहयोग उपलब्ध होता है। संकट की स्थिति में संयुक्त परिवार एक मजबूत सहारा प्रदान करता है और सदस्यों के बीच आत्मीयता, सद्भाव और पारस्परिक सहायता की परंपरा को जीवित रखता है। इस प्रकार संयुक्त परिवार भारतीय समाज की स्थिरता, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है।

4. **एकाकी परिवार व्यवस्था का उदय**

भारतीय समाज में पिछले कुछ दशकों में पारिवारिक संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिला है, जिसमें संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकाकी (न्यूक्लियर) परिवारों का तेज़ी से उभार हुआ है। एकाकी परिवार वह व्यवस्था है जिसमें केवल पति-पत्नी और उनके अवयस्क बच्चे एक साथ रहते हैं। यह संरचना आधुनिक जीवनशैली के अनुरूप अधिक स्वतंत्र, लचीली और गतिशील मानी जाती है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय, संसाधनों का उपयोग और सामाजिक गतिविधियाँ इस परिवार में सीमित सदस्यों द्वारा ही संचालित की जाती हैं, जिससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दायरा बढ़ता है।

एकाकी परिवारों का रुझान 1990 के उदारीकरण के बाद विशेष रूप से तेजी से बढ़ा। 2011 की जनगणना एवं राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (NSSO, 2013) के अनुसार शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों की संख्या उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। सीमित आवास, उच्च जीवन-यापन लागत और रोजगार के अवसरों के लिए बढ़ते पलायन ने संयुक्त परिवारों को शहरी जीवन के अनुरूप चुनौतीपूर्ण बना दिया। ग्रामीण क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में युवा रोजगार के लिए शहरों की ओर जा रहे हैं, जिससे संयुक्त परिवार धीरे-धीरे कमजोर पड़ रहे हैं।

वैश्वीकरण और आधुनिक जीवन शैली ने भी पारिवारिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों में नौकरी, सेवा क्षेत्र का विस्तार, पेशेवर गतिशीलता, निरंतर स्थानांतरण, और स्वतंत्र निर्णय लेने की इच्छा ने छोटे परिवारों की अवधारणा को बढ़ावा दिया। आधुनिक कार्य संस्कृति में समय की कमी, नौकरी का दबाव और व्यक्तिगत आकांक्षाएँ ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित करती हैं जहाँ एकाकी परिवार अधिक अनुकूल और सुविधाजनक विकल्प बन जाता है। इस प्रकार सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने एकाकी परिवार व्यवस्था को भारतीय समाज में एक नए पारिवारिक स्वरूप के रूप में स्थापित कर दिया है।

**5. संयुक्त परिवारों के टूटने के प्रमुख कारण**

भारतीय समाज में संयुक्त परिवारों के टूटने के पीछे आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारक गहराई से जुड़े हुए हैं। आर्थिक कारणों में सबसे प्रमुख है रोजगार के लिए शहरी पलायन। Desai (2012) सहित कई शोध बताते हैं कि बेहतर शिक्षा और नौकरी की तलाश में युवाओं को शहरों में बसना पड़ा, जिससे परिवारों में भौगोलिक दूरी बढ़ी। शहरी जीवन की उच्च लागत—किराया, परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का बढ़ता खर्च—संयुक्त परिवार को आर्थिक रूप से कठिन बनाता गया। आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत आय के स्रोतों ने व्यक्तिवाद को बढ़ावा दिया, जिससे सामूहिक आर्थिक संरचना कमजोर हुई।

सामाजिक कारणों में शिक्षा का विस्तार, जिससे निर्णय लेने की स्वतंत्रता बढ़ी और पारंपरिक सोच का प्रभाव कम हुआ। साथ ही 2014 तक महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में निरंतर वृद्धि ने पारंपरिक पारिवारिक भूमिकाओं को चुनौती दी। पीढ़ियों के बीच जीवनशैली, विवाह और करियर को लेकर बढ़ते मतभेद भी परिवार के विघटन में महत्वपूर्ण रहे।

मनोवैज्ञानिक कारकों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजता की बढ़ती चाह प्रमुख है। संयुक्त परिवार की सीमाएँ और नियम आधुनिक पीढ़ी को बाधक लगते हैं। साझा रहने से भूमिकाओं की अस्पष्टता, जिम्मेदारियों का असंतुलन और भावनात्मक संघर्ष उत्पन्न होते हैं। वैश्विक संस्कृति और मीडिया के प्रभाव ने व्यक्तिवाद को और मजबूत किया, जिससे संयुक्त परिवार कमजोर पड़ने लगे।

### 7. संयुक्त परिवारों के टूटने का समाज पर प्रभाव

संयुक्त परिवारों के टूटने से भारतीय समाज में अनेक सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव देखने को मिले हैं। सकारात्मक प्रभावों में सबसे प्रमुख है निर्णय लेने में स्वतंत्रता। एकाकी परिवारों में व्यक्तिगत और पेशेवर निर्णय अधिक सहजता से लिए जा सकते हैं, जिससे युवा अपनी आकांक्षाओं के अनुसार जीवन जी पाते हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण भी एक महत्वपूर्ण सकारात्मक पहलू है; स्वतंत्र वातावरण के कारण वे शिक्षा, रोजगार और आर्थिक गतिविधियों में आगे बढ़ सकीं। छोटे परिवारों में संसाधनों का उपयोग अधिक योजनाबद्ध और नियंत्रित रूप से होता है, जिससे आर्थिक प्रबंधन सुगम होता है। साथ ही शहरी जीवन शैली और आधुनिक कार्य संस्कृति के अनुरूप एकाकी परिवार अधिक अनुकूल साबित हुए।

नकारात्मक प्रभावों में बुजुर्गों की उपेक्षा एक गंभीर चिंता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में वृद्ध जनसंख्या 104 मिलियन थी, और एकाकी परिवार मॉडल ने कई बुजुर्गों को भावनात्मक, सामाजिक और शारीरिक रूप से असुरक्षित कर दिया। बच्चों में सम्मान, सहयोग और अनुशासन जैसे सामाजिक मूल्यों का विकास, जो संयुक्त परिवार में स्वाभाविक रूप से होता था, अब सीमित हो गया है। सामाजिक अलगाव, अवसाद और अकेलापन भी बढ़ा है, क्योंकि सामाजिक बातचीत और पारिवारिक समर्थन तंत्र कमजोर हुए हैं। आर्थिक अस्थिरता भी एक चुनौती है; बीमारी, नौकरी छूटना या आकस्मिक संकट की स्थिति में संयुक्त परिवार जैसी सुरक्षा अब आसानी से उपलब्ध नहीं होती। इस प्रकार संयुक्त परिवारों का विघटन समाज के लिए मिश्रित परिणाम लेकर आया है।

### 8. उभरती चुनौतियाँ

संयुक्त परिवारों के टूटने के बाद भारतीय समाज कई नई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनका प्रभाव सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक स्तरों पर देखा जा सकता है। सबसे पहली चुनौती बुजुर्ग देखभाल की है। जैसे-जैसे परिवार छोटे होते गए, बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल प्राथमिकता से बाहर होती गई। परिणामस्वरूप वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि देखी गई, जो बदलती पारिवारिक जिम्मेदारियों और कमजोर होते संबंधों का संकेत है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती है बच्चों का समग्र विकास। आधुनिक शहरी जीवन में माता-पिता का कार्यभार बढ़ा है, तनाव अधिक है और परिवार का सामाजिक वातावरण सीमित हो गया है। संयुक्त परिवारों में मिलने वाला अनुशासन, भावनात्मक सहयोग और मूल्य शिक्षा एकाकी परिवारों में कम हो गया है, जिससे बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तीसरी चुनौती सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन की है। निजता, व्यक्तिवाद और प्रौद्योगिकी आधारित जीवन शैली ने समाज को अधिक अलगाववादी बना दिया है। रिश्तों की गहराई कम हुई है और सामाजिक संपर्क सीमित होने लगा है।

अंततः, वैवाहिक संबंधों में तनाव भी बढ़ा है। व्यक्तिगत आकांक्षाओं, कार्यभार और सामाजिक दबावों के कारण दंपतियों में संघर्ष बढ़े हैं। Family Court Records (2014) के अनुसार तलाक के मामलों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो पारिवारिक संरचना में जारी परिवर्तन का प्रत्यक्ष परिणाम है।

### 9. संयुक्त परिवार व्यवस्था को मजबूत करने के उपाय

संयुक्त परिवार व्यवस्था को मजबूत करने के लिए सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर पर सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। सबसे पहले, परिवार के भीतर संवाद बढ़ाना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि नियमित और खुली बातचीत पीढ़ियों के बीच के मतभेदों को कम करती है और आपसी सम्मान को बढ़ाती है। आर्थिक एवं सांस्कृतिक समायोजन भी संयुक्त परिवार की स्थिरता का आधार हैं—सामूहिक वित्तीय योजना, पारिवारिक बजट और जिम्मेदारियों का स्पष्ट विभाजन परिवार में संतुलन लाता है, जबकि परंपराओं और सांस्कृतिक गतिविधियों में सामूहिक सहभागिता परिवारिक एकता को मजबूत करती है। बुजुर्गों के लिए व्यापक समर्थन प्रणाली विकसित करना भी आवश्यक है, जिसमें स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, डे-केयर सेंटर और सामाजिक सहभागिता कार्यक्रम शामिल हैं। इससे बुजुर्गों की जीवन गुणवत्ता बढ़ती है और वे परिवारिक ढांचे में सक्रिय बने रहते हैं। बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास परिवार और शिक्षा संस्थानों के संयुक्त प्रयासों से संभव है, जो उन्हें जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनने में मदद करता है। अंत में, महिलाओं की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन संयुक्त परिवार के संतुलन के लिए अनिवार्य है; उनकी स्वतंत्रता, शिक्षा और अनुभव को उचित सम्मान और निर्णय प्रक्रिया में शामिल किए जाने से परिवार अधिक सामंजस्यपूर्ण और स्थिर बनता है।

## निष्कर्ष

संयुक्त परिवार से एकाकी परिवार की ओर बढ़ता परिवर्तन भारतीय समाज में एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन है। यह परिवर्तन आर्थिक विकास, शहरीकरण, शिक्षा और वैश्विक प्रभावों का परिणाम है। यद्यपि एकाकी परिवार ने स्वतंत्रता, सुविधा और आधुनिकता प्रदान की है, परंतु संयुक्त परिवार की भावनात्मक सुरक्षा, सामाजिक समर्थन और सांस्कृतिक मूल्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
आवश्यकता इस बात की है कि—

- आधुनिक और पारंपरिक मूल्यों में संतुलन स्थापित किया जाए,

- परिवार संस्था को भावनात्मक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से मजबूत किया जाए,
- और ऐसी नीतियाँ बनाई जाएँ जो परिवार को समाज की केंद्रीय इकाई बनाए रखें।

यदि परिवार का स्वरूप बदल भी रहा है, लेकिन रिश्तों में प्रेम, सम्मान और सहयोग कायम रहे तो समाज का संतुलन भी सुरक्षित रहेगा।

## संदर्भ

[1]. Census of India (2011). Government of India.
[2]. National Sample Survey Office (NSSO) (2013). Household Structure and Social Change in India.
[3]. Desai, M. (2012). Urbanisation and Family Change in India. Rawat Publications.
[4]. Uberoi, P. (2004). The Family in India: Beyond the Nuclear vs. Joint Debate. Oxford University Press.
[5]. Patel, Tulsi (2010). The Family in India: Structure and Practice. Sage Publications.
[6]. Sharma, R. (2014). "Changing Dynamics of Family System in Urban India." Indian Journal of Social Research, Vol. 55.
[7]. Singh, K. (2009). Changing Pattern of Indian Family System.
[8]. Giddens, Anthony (2009). Sociology. Polity Press.
[9]. Kapadia, K.M. (2011 Edition). Marriage and Family in India.
[10]. Nair, P. (2013). “Impact of Urbanisation on Social Institutions.” Sociology Review.
[11]. Family Court Records (2014). Annual Reports.